इकाई 8 रूपांतरण : विविध आयाम, चुनौतियाँ एवं रणनीतियाँ

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 अनुवाद के एक प्रकार के रूप में रूपांतरण

8.2.1 फिल्म तथा रूपांतरण के अन्य प्रकार

8.3 टेलीविजन कार्यक्रम का रूपांतरण

8.4 भारत में टेलीविजन कार्यक्रम का रूपांतरण

8.5 वैश्विक मनोरंजन उद्योग में रूपांतरण

8.6 रूपांतरणकर्ता की भूमिका

8.7 रूपांतरण : चुनौतियाँ एवं रणनीतियाँ

8.7.1 सांस्कृतिक रूपांतरण

8.7.2 साहित्यिक रूपांतरण

8.7.3 प्रारूप का रूपांतरण और डबिंग

8.8 टेलीविजन कार्यक्रम का रूपांतरण और दृश्य बोध (समझ)

8.9 सारांश

8.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

8.11 उपयोगी पुस्तकें

8.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद :

- आप जान सकेंगे कि टेलीविजन कार्यक्रम का रूपांतरण क्या है;
- भारत में टेलीविजन कार्यक्रम के रूपांतरण और वैश्विक मनोरंजन उद्योग के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे;
- रूपांतरण के कार्य में प्रमुख चुनौतियों तथा रणनीतियों के बारे में जान सकेंगे;
- आप जान सकेंगे कि प्रारूप रूपांतरण और डबिंग क्या है;
- आप टेलीविजन कार्यक्रम के रूपांतरण और दृश्य बोध को समझ जाएँगे।

8.1 प्रस्तावना

ऐतिहासिक रूप से, दक्षिण एशिया में जनसंचार के प्रसार को 1980 के दशक के उतरार्द्ध के आर्थिक भूमंडलीकरण की वास्तविकताओं की पृष्ठभूमि में बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। विश्व के बाजार एक दूसरे पर परस्पर–निर्भर हो चुके है और बहु–राष्ट्रीय कंपनियाँ वैश्विक आर्थिक शक्ति बन गई थीं। इसने देश राज्यों और अंतरराष्ट्रीय हितों के निर्माण के बीच शक्ति संबंधों को प्रभावित किया था। इसके साथ ही दूरसंचार में प्रगति

हुई। उपग्रह और सूचना प्रौद्योगिकी तकनीक ने अब अंतर्राष्ट्रीय संचार–संवाद की प्रकृति को बदल डाला है और अवसरों के नए द्वार खोल दिए है। इंटरनेट की उत्पति के साथ ही, संचार प्रौद्योगिकी के अभिसरण की अवधारणा लोगों के लिए एक सूत्र वाक्य बन चुकी है। अभूतपूर्व संचार–क्रांति के प्रभाव को समाज के विविध वर्गों विशेषकर युवा वर्ग ने अनुभव किया है। यहाँ तक कि इंटरनेट तथा सूचना प्रौद्योगिकी के साधन जैसे मोबाइल, या टी.वी. के बगैर अस्तित्व की कल्पना करना असंभव हो गया है। दक्षिण एशिया में राष्ट्रीय तथा प्राइवेट प्रसारणकर्ता अपने नागरिकों के लिए मनोरंजन के अतिरिक्त विभिन्न विषयों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और विकास से संबधित कार्यक्रम प्रसारित करते रहे है।

बेहतर संचार तकनीक ने यह संभव बना दिया है कि एक ही समय में समान संचार माध्यमों की विषयवस्तु (कंटेंट) को संपूर्ण विश्व में अनुवाद तथा रूपांतरण उपलब्ध कराया जा सकता है। इस प्रवृत्ति को तकनीकों के बीच सहयोग और अरबों डॉलर वाले मीडिया कंपनियों के विलय और अधिग्रहण के माध्यम से बढ़ रही वैश्विक अर्थव्यवस्था में मीडिया और विज्ञापन के प्रभुत्व से और बढ़ावा मिला है।

अनुवाद की रणनीति अथवा प्रकार के रूप में रूपांतरण ने विभिन्न प्रकार की सूचनाओं एवं साहित्य के चहुँमुखी प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके माध्यम से सूचना तथा साहित्य ने न केवल सीमा से असीम की यात्रा की है अपितु विभिन्न समाजों, संस्कृतियों के बीच संवाद को और अधिक संभव बनाया है। इस पृष्ठभूमि में हम रूपांतरण के विविध आयामों, टेलीविजन और कार्यक्रम का रूपांतरण तथा रूपांतरण की विभिन्न तकनीकों अथवा रणनीतियों पर विचार–विमर्श करेंगे।

8.2 अनुवाद के एक प्रकार के रूप में रूपांतरण

रूपांतरण अनुवाद का एक प्रकार है। एक शाब्दिक कार्य को, उसी कार्य के द्वारा प्रदान किए गए अवयवों के आधार पर दूसरे प्रकार के जनसंचार माध्यम में रूपांतरित करने की प्रक्रिया को रूपांतरण कहते हैं। जब हम रूपांतरण के बारे में बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य मूल कार्य या शब्द को उसी रूप में दूसरे माध्यम में प्रकट करना होता है। रूपांतरण न केवल मौलिक पाठ (शब्द) में एक समान विषयवस्तु/संदेश को सूचित करता है बल्कि माध्यम के चयन के आधार पर विषयवस्तु/संदेश के प्रभाव में संवृद्धि करता है। उदाहरण के लिए, शास्त्रीय नाटकीय पाठ या पटकथा में सन्निहित संदेश को दृश्य–श्रव्य मीडिया में बेहतर तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है। अनके साहित्यिक कार्यों को विभिन्न प्रारूपों में रूपांतरित किया गया है। मीडिया के नए प्रारूप से भी नाटकों और उपन्यासों को फिल्म या रेडियो या टेलीविजन ड्रामा के रूप में रूपांतरित करने की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला है। यह सिनेमा का विकास ही था जिसने शास्त्रीय नाटक/उपन्यास को प्रारंभिक सिनेमा के रूप में घनीभूत करते हुए रूपांतरण को एक सामान्य और आसान कार्य बना दिया। प्रारंभिक सिनेमा के विकास के अधिकांश चिह्नों की जड़ों को साहित्य में देखा जा सकता है। रूपांतरण दो विशिष्ट प्रकार का हो सकता है – पहला, जो मूल कार्य या रचना के प्रति थोड़ा या बहुत वफादार होता है, उन्हें पहले के कार्य या रचना के विशिष्ट तत्वों को बनाए रखना, दूसरा जिसे संस्करण (वर्जन) के नाम से जाना जाता है, जहाँ मूल कार्य के महत्वपूर्ण अवयवों को हटा दिया जाता है, उसमें संशोधन किया जाता है या फिर नए तत्वों या अवयवों को जोड़ा जाता है। यद्यपि, सिनेमा को रूपांतरण के साधन के रूप में कम देखा गया है, इसके स्थान पर इसे एक प्रस्थान बिंदु के रूप में देखने की प्रवृति अधिक रही है। स्क्रीन (परदे) का रूपांतरण एक लिखित विषयवस्तु को एक चलचित्र में स्थानांतरित करने की प्रक्रिया को कहा जाता है। यह एक व्युत्पन्न कार्य

है, इसका सबसे सामान्य उदाहरण एक उपन्यास का उपयोग एक चलचित्र के निर्माण में किया जाना है। परंतु फिल्म और टेलीविजन के रूपांतरण में गैर–काल्पनिक विधाएँ जिसमें पत्रकरिता लेखन, आत्मकथाएँ, कॉमिक की किताबें, धर्मग्रंथ, नाटक और यहाँ तक कि दृश्य–श्रवण मीडिया भी शामिल किए जाते हैं।

8.2.1 फिल्म तथा रूपांतरण के अन्य प्रकार

रूपांतरण का एक सीधा अर्थ एक विधा का दूसरी विधा में परिवर्तन करना है। उदाहरण के लिए, किसी कहानी का रेडियो या टी.वी. के लिए किया गया रूपांतरण इसका अन्य प्रकार है। किसी उपन्यास का फिल्म में रूपांतरण जैसे कि आर.के. नारायणन के उपन्यास '*गाइड*' पर बनी फिल्म *गाइड*। फिल्म के क्षेत्र में रूपांतरण का खूब प्रयोग किया गया है। हिंदी सिनेमा तथा पश्चिम के हॉलीवुड सिनेमा और अन्य सभी सिनेमा पर यह बात लागू होती है। हॉलीवुड की अँग्रेजी फिल्मों को देखें तो माइकल क्रिस्टन के उपन्यास '*जुरासिक पार्क*' पर इसी नाम से स्टिवन स्पिलवर्ग ने विश्वप्रसिद्ध फिल्में बनाईं, जिसका कई अन्य भाषाओं में भी अवतरण हुआ। मरिओ पूज़ो द्वारा लिखित उपन्यास '*दी गॉड फादर*' को फोर्ड कपोला ने रूपांतरित कर *गॉड फादर* नामक फिल्म का निर्माण किया था। इसी प्रकार मार्ग्रेट मिशेल के प्रसिद्ध उपन्यांस 'गॉन *विद् द विंड*' का रूपांतरण कर विक्टर फ्लेमिंग ने फिल्म का निर्माण किया था, जिसे फिल्म इतिहास की श्रेष्ठ फिल्मों में से एक माना जाता है। 'दी जंगल बुक' '*प्राईड एंड प्रेजुडिस*', '*नो कंट्री फॉर ओल्ड मैन* '*वुदरिंग हाइटस*' और '*द नेमसेक*' आदि कई फिल्में उपन्यासों को रूपांतरित कर बनाई गई हैं। भारत में भी शरतचंद चट्टोपाध्याय के बंगाली उपन्यांसों पर एक दर्जन से ज्यादा फिल्में बनीं। उनके उपन्यास पर हिंदी में बनी '*देवदास*' खूब प्रसिद्ध हुई। रबींद्रनाथ टैगोर की 'चोखेर वाली और शरतचंद चट्टोपाध्याय के उपन्यास *परिणिता* का भी रूपांतरण हुआ। '*उमराव जान*', '*थ्री इडियट्स*', क्रमशः उर्दू तथा अंग्रेजी से रूपांतरित हैं। संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित '*साँवरिया*' रूसी उपन्यासकार फ्योडोर दोस्तोयवस्की के उपन्यास '*व्हाइट नाइट*' का रूपांतरण है। यहाँ ध्यान रखने की बात है कि उपन्यास रूसी भाषा में लिखा गया है जिसके अंग्रेजी अनुवाद के आधार पर रूपांतरण हुआ है। सत्यजीत की '*अप्पू ट्रिलोजी*', विभूति बंधोपाध्याय की पुस्तकों पर आधारित रूपांतरण है जिसे 'टाइम' मैगजीन द्वारा दुनिया की सौ अच्छी फिल्मों में शामिल गिया गया है। जब रूपांतरण की बात आती है, तब अंग्रेजी नाटककार विलियम शेक्सपीयर का नाम भुलाया नहीं जा सकता। यहाँ तक कहा जा सकता है कि विषयवस्तु के स्तर पर अथवा सीधे–सीधे रूपांतरण के रूप में हिंदी फिल्म जगत् ने शेक्सपीयर की कला का खूब उपयोग किया है तथा आगे भी जारी रहेगा। शेक्सपीयर के अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद तो हुए ही हैं, किंतु कुछ नाटकों पर हाल ही में अतिप्रसिद्ध फिल्में बनी हैं जिन्हें रूपांतरण की दृष्टि से श्रेष्ठ माना जा सकता है। एक ओर गुलजार ने शेक्सपीयर के नाटक '*कॉमेडी ऑफ ऐरर*' का रूपांतरण कर 'अंगूर' फिल्म बनाई थी तो विशाल भारद्वाज ने विगत वर्षों में '*मैकबथ*' का '*मकबूल*' तथा *ओथेलो* का '*ओंकारा*' की तरह रूपांतरण किया।

कभी–कभी अनुवाद करते हुए किसी विदेशी भाषा की रचना के नाम स्थान तथा सांस्कृतिक परिवेश को नई भाषा तथा संस्कृति के अनुरूप बदलकर उसका रूपांतरण किया जाता है। इस प्रकार के रूपांतरण के रूप में 19वीं सदी में भारतेंदु द्वारा शेक्सपीयर के नाटक '*मर्चेंट ऑफ वेनिस*' का रूपांतरण 'दुर्लभ बन्धु' है जिसमें अंग्रेजी नामों का भारतीयकरण कर दिया है जैसे *एंटोनीओ (अनंत), बनैनिओं (बसंत), पोर्शिया (पुरुश्री) तथा शायलॉक (शैलाक्ष)* आदि। ठीक इसी प्रकार बीसवीं सदी में अमेरिकी नाटक आर्थर मिलर के नाटक '*आल माई संस*' का रूपांतरण हिंदी में '*मेरे बच्चे*' शीर्षक से किया है। नाटक के रूपांतरण के इस संबंध में लिखा है :

आल माई संस के हिंदी रूपांतरण में मूल कृति के निकट रहने की यथा–संभव चेष्टा की गई है। नाटक के कुछ अंशों को संक्षिप्त किया गया है तथा कुछ को छोड़ भी दिया गया है। संक्षिप्त किया गया है नाटक को चुस्त बनाने के लिए और कुछ अंशों या पात्रों को छोड़ा गया है कुछ व्यावहारिक सुविधाओं की दृष्टि में रखने के कारण। पत्नी लीडिया और मुहल्ले के बालक बर्ट को रूपांतरण में छोड़ दिया गया है। लीडिया (लीली) केवल एक बार नेपथ्य से आज लगाती है, बर्ट आता ही नहीं। उसकी जेल आदि की बातों का इंगित बाद में प्रसंगानुकूल कर दिया गया है। खूबसूरत टाँगों की प्रशंसा, शैंपेन पीने का प्रस्ताव, बुजुर्गों का नाम लेकर पुकारना आदि ऐसी बातें थीं जिन्हें भिन्न ढंग से कहना ही उचित था और वैसे ही वे कही गई हैं। किंतु ऐसा कोई महत्वपूर्ण अंश नहीं छोड़ा गया है, जिसके कारण नाटक का कथ्य अधूरा या अस्पष्ट रह गया हो, कथानक बीच में टूटा या भूला हो। एक और बात – नाटककार ने मंचसज्जा, पात्रों की वेशभूषा एवं उनकी मनः स्थिति का विस्तृत वर्णन किया है। नाटककार के निर्देशों को हूबहू नहीं रखा गया है – हर निर्देशक अपने ढंग से रंगसज्जा, अंग–संचालन एवं पात्रों के स्थान–परिवर्तन की परिकल्पना करता है। व्यावहारिक दृष्टि से विस्तृत निर्देश का होना–न–होना विशेष मायने नहीं रखता।

रूपांतरण के संदर्भ में बात की जाए तो एक भाषा की किसी कृति को अन्य भाषा की धरती पर इस प्रकार रोप देना कि वह विदेशी न ज्ञात हो सके रूपांतरणकर्ता की पहली समस्या है। यह कार्य बेहद चुनौतीपूर्ण है। इसके लिए रूपांतरणकर्ता को न केवल दोनों भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है, बल्कि मूल कृति में चित्रित स्थान की परंपरा, प्रथा, आचरण और सामाजिक मान्यताओं आदि का ज्ञान होना भी उतना ही आवश्यक है जितना अपने स्थान और अपने जनों का। इस ज्ञान के अतिरिक्त उसकी कल्पना–शक्ति भी इतनी विषद होनी आवश्यक है कि वह अपने परिवेश में चरित्रों को प्रतिरोपित कर सके। रूपांतरण वस्तुतः एक पौधे को विदेशी धरती से उखाड़ कर निजी अपनी धरती और जलवायु के अनुरूप ढाल लेना ही है। इसके लिए अत्यंत कुशल, कोमल, सावधानीपूर्ण, ममतामय देखभाल की आवश्यकता है। बहुत से मामलों में इसके विपरीत मुक्त, स्पष्ट और निष्कपट अनुवाद में मूल के सौंदर्य और लालित्य के साथ–साथ मूल के विदेशीपन को भी सुरक्षित रखा जाता है। रूसी से अनूदित कहानी पूर्णतया रूसी ही लगनी ही चाहिए, अन्यथा उसे अच्छा अनुवाद नहीं कहा जा सकेगा, क्योंकि अनुवादक अपनी भाषा में लिखी किसी चीज को प्रस्तुत करने के बजाय उसके मूल स्वरूप में ही प्रस्तुत कर रहा है। अनुवाद की इस रणनीति को विदेशीकरण की रणनीति कहते हैं जबकि रूपांतरण में देशीकरण अर्थात लोकलाइज़ेशन की रणनीति का अधिक प्रयोग होता है।

टेलीविज़न कार्यक्रमों के रूपांतरण के विषय में इस पर आगे चर्चा की जा रही है।

8.3 टेलीविजन कार्यक्रम का रूपांतरण

जनसंचार क्रांति के आगमन और विशेष रूप से रेडियो और टेलीविजन के विकास ने रूपांतरण के दायरे को बहुत विस्तृत कर दिया है। टेलीविजन प्रसारण ने एक ऐसी स्थिति को जन्म दिया जिसे आज मुख्य रूप से कार्यक्रम, प्रसारण सारणी या शेड्यूल कहा जाता है। ये शेड्यूल विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों से मिलकर बनते है जिसे एक पूर्वनिर्धारित संचालन क्रम के आधार पर प्रसारण के लिए तैयार किया जाता है। जैसा कि हम चर्चा कर चुके हैं कि अनेक प्रकार की साहित्यिक कृतियों को, जिसमें लघुकथाएँ, उपन्यास, नाटक आदि शामिल है, टेलीविजन या फिल्म प्रसारण में रूपांतरित कर लिया गया है। यद्यपि, टेलीविजन के कारण प्रसारकों को साप्ताहिक एपिसोड उपलब्ध कराने के अतिरिक्त गुंजाइश का एहसास हुआ। इसने साहित्यिक कृतियों के अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय रूपांतरण के लिए अधिक सहज माध्यम उपलब्ध कराया है, जो कि पहले से

उपलब्ध फिल्मों के लिए प्रदान किए गए समय की कमी की तुलना में अधिक सुलभ था। उदाहरण के लिए, एक तीन घंटे के सिनेमा/फिल्म के द्वारा एक शास्त्रीय उपन्यास का रूपांतरण करने का प्रयास, उस मूल साहित्यिक कृति के साथ न्याय करने में सक्षम नहीं होगा, जबकि उसी उपन्यास को टेलीविजन के लिए बनने वाले धारावाहिक में प्रस्तुत करने के कारण अधिक स्पेस उपलब्ध होगी जो उपन्यास की प्रस्तुति की दृष्टि से भी अधिक संगत होगा।

8.4 भारत में टेलीविजन कार्यक्रम का रूपांतरण

भारतीय भाषाओं के प्रमुख रचनाकारों की चर्चित रचनाओं को दूरदर्शन द्वारा सन 1980 के आरंभ से रूपांतरित कर प्रस्तुत किया जाता रहा है। उदाहरण के लिए, 1988 में शंकर नाग द्वारा निर्देशित टेली–धारावाहिक '*मालगुडी डेज*', भारतीय अंग्रेजी उपन्यासकार आर. के. नारायण की कृति पर आधारित था उनकी अन्य रचनाओं जैसे–*स्वामी एंड फ्रेंड्स* (1935), '*मालगुडी डेज* (1942), *ए हॉर्स एंड टू गोट्स* (1980) और *वेंडर ऑफ स्वीट्स* (1987) को भी रूपांतरित किया गया और 1987 में निर्मित टेली–धारावाहिक *तमस*, जिसे गोविंद निहलानी द्वारा निर्देशित किया था, वह प्रख्यात लेखक भीष्म साहनी द्वारा 1975 में लिखित प्रसिद्ध हिंदी उपन्यास *तमस* पर आधारित था। इसके अलावा अन्य सफल काल्पनिक टेलीविजन कार्यक्रमों का रूपांतरण बहुत सफल रहा है। गैर–सर्जनात्मक साहित्य पर निर्मित कार्यक्रमों का रूपांतरण भी सफल हुआ है, जैसे कि वृत्त–चित्र, गैर–पत्रकारिता और अन्य बेहतर तरीके से शोध विषय से जुड़े समसामयिक घटनाओं पर आधारित कार्यक्रम। इस संबंध में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा अंग्रेजी में लिखित *डिस्कवरी ऑफ इंडिया* का उल्लेख करना भी प्रासंगिक होगा, जिसे *भारत एक खोज* (1988), के रूप में 53 कड़ियों वाले टेलीविजन धारावाहिक (शृंखला) के रूप में हिंदी में निर्मित किया गया। यह वृत्तचित्र बेहद प्रामाणिक एंव रोचक तरीके से भारत के 5000 वर्षों के इतिहास को आरंभ से वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक प्रकट करता है। यह शृंखला विभिन्न अवधियों में भारतीय इतिहास का एक अन्वेषण था और इसे श्याम बेनेगल द्वारा तैयार किया गया था। इसे भारत के राष्ट्रीय टेलीविजन नेटवर्क दूरदर्शन पर प्रसारित किया गया था।

8.5 वैश्विक मनोरंजन उद्योग में रूपांतरण

अनेक साहित्यिक कृतियों को मीडिया के विभिन्न प्रारूपों में रूपांतरित किया गया है। इसके परिणामस्वरूप नाटकों और उपन्यासों को सिनेमा या रेडियो, टेलीविजन नाटक के रूप में रूपांतरित करने की प्रवृति को बढ़ावा मिला है। इससे अनेक साहित्यिक कृतियों को लक्षित दर्शकों के आधार पर विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि वैश्विक मनोरंजन उद्योग द्वारा किया गया कुछ सर्वश्रेष्ठ रूपांतरण महान साहित्यिक कृतियों के अनुवाद पर आधारित था। इस कथन का उद्देश्य इस विवाद में नहीं पड़ना है कि अनुवाद रूपांतरण से भी पहले रहा है या नहीं। वैश्विक मनोरंजन उद्योग द्वारा तैयार करवाए गए कार्यक्रमों की गहराई से समीक्षा करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि रूपांतरण अनुवाद पर आधारित है या नहीं, परंतु ये रूपांतरित रचनाएँ या उत्पाद अपने आप में अद्वितीय हैं। मनोरंजन के लिए बड़े पैमाने पर फिल्म निर्माण के इतिहास की शुरुआत महान साहित्यिक कार्यों के रूपांतरण के साथ आरंभ हुई।

अनूदित कृतियों से रूपांतरित किए गए मनोरंजन उत्पादों के अतिरिक्त, साहित्यिक कृतियों के प्रत्यक्ष रूपांतरण ने सफलता और लोकप्रियता की ऊँचाइयों को छुआ। फिल्म और टेलीविजन निर्देशकों और निर्माताओं के रूपांतरण के दावों के बावजूद, उन्होंने

स्वयं भी मूल कृतियों से कुछ भागों को निकालने या काटने या अपनी कहानी में कुछ शामिल करने या अतिरिक्त अवयवों को जोड़ने के लिए "कलात्मक लाइसेंस" (आर्टिस्टिक लाइसेंस) प्राप्त किया है। पश्चिमी जगत यूरोपियन, अमेरिकन तथा भारतीय बॉक्स ऑफिस की कुछ बेहतरीन फिल्में प्रमुख लोकप्रिय साहित्यिक कृतियों पर आधारित रही हैं।

ब्रिटेन से प्रकाशित होने वाले अखबार दि गार्जियन ने वर्ष 2008 में सबसे अच्छी बिक्री वाली पुस्तकों पर आधारित 28 फिल्मों की सूची प्रकाशित की है। इस सूची में हार्पर ली द्वारा लिखित '*टू किल ए मोकिंग बर्ड*'या मारिओ पूजो द्वारा विरचित '*दि गॉडफादर* या बोरिस पास्टेरनक द्वारा लिखित *डॉक्टर ज्हिवागो* या चार्ल्स डिकेंस द्वारा लिखित *ओलिवर ट्विस्ट*, थॉमस केनेल्ली द्वारा लिखित *शिंडलर्स लिस्ट* (शिंडलर्स आर्क) आदि फिल्में शामिल हैं। एक प्रमुख फिल्म जो *दि गार्जियन* की सूची में छूट गई थी, वह है मार्गरेट मिचेल लिखित *गोन विद दि विंड*। पूर्व में भी फिल्मों को अनेक बार रंगमंच और परदे के लिए रूपांतरित किया गया था, जिसमें वर्ष 1939 में कलार्क गबले और विविंलिघ अभिनीत बोलती हुई सिनेमा सबसे प्रसिद्ध हुई थी। इसके अतिरिक्त ऐसे बहुत सारे उदाहरण दिए जा सकते हैं।

कुछ अंग्रेजी फिल्मों को नामों का उल्लेख करने का अर्थ यहाँ स्पष्ट करना है कि अनुवाद के साथ–साथ साहित्यिक कृतियों का वैश्विक मीडिया और मनोरंजन उद्योग द्वारा रूपांतरण का कमोबेश एक ही उद्देश्य रहा है – जो है बड़े से बड़े लक्ष्य समूह तक पहुँचना। पहला प्रिंट माध्यम के जरिए विभिन्न संस्कृतियों और भाषायी लक्षित दर्शकों तक पहुँचने पर जोर देता है, जबकि दूसरा दृश्य–श्रव्य मीडिया के द्वारा सभी वर्ग के दर्शकों तक पहुँचना चाहता है।

8.6 रूपांतरणकर्ता की भूमिका

रूपांतरण की अवधारणा को किसी निश्चित तथा सीमित अर्थ में नहीं बाँधा जा सकता। इसे साहित्य को समृद्ध करने तथा उसके सामान्यीकरण करने – दोनों ही अर्थों में लिया जा सकता है। एक ओर, जहाँ यह माना जाता है कि रूपांतरण के द्वारा किसी कालजयी रचना का आमजन तथा साधारण समाज के आस्वादन हेतु सामान्यीकरण किया जाता है, वहीं यह तथ्य भी अस्वीकार्य नहीं है कि रूपांतरण ही वह माध्यम है जिसकी सहायता से बच्चों तथा किशोरों को साधारण तथा सरल व रोचक तरीके से श्रेष्ठतम साहित्य तथा इतिहास के जटिल तथ्यों व सत्यों से परिचित करवाया जा सकता है जो उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। रूपांतरण के माध्यम से श्रेष्ठतम साहित्य किसी खास वर्ग तथा आयु तक सीमित न रहकर आम जन तक पहुँचता है तथा जनसाधारण को प्रभावित करता है। दोनों ही स्थितियों में इसे स्वीकारना ही होगा कि फिल्मों के अतिरिक्त रूपांतरण के अन्य माध्यम, जैसे – कॉमिक्स, टेलीफिल्म, धारावाहिक, ऑडियो–बुक्स, कहानियों का सरल रूप में पुनर्लेखन तथा साहित्यिक रूपांतरण आदि सभी संप्रेषण के बहुआयामी रूप हैं। इस संदर्भ में, रूपांतरणकर्ता की भूमिका अनुवादक की तुलना में बहुमुखी तथा जटिल हो जाती है। अनुवादक जहाँ केवल पाठ के लिखित स्वरूप तक सीमित होते हैं व एक भाषा में लिखित पाठ को दूसरी भाषा में ले जाने का माध्यम बनते हैं वहीं रूपांतरणकर्ता की भूमिका अनुवादक से कहीं आगे कहीं न कहीं मूल रचनाकार के समतुल्य हो जाती है जहाँ वे मूल रचनाकार की कथा को न केवल नए शिल्प में ढालते हैं अपितु उसे लक्ष्य दर्शक वर्ग की आयु, वर्ग, रुचि, कालखंड, परिवेश आदि विभिन्न परिस्थितियों को ध्यान में रखकर उसका पुनर्गठन करते हैं। ऐसे भी कई उदाहरण देखने को मिलते हैं जहाँ रूपांतरणकर्ता स्वयं प्रतिष्ठित लेखक हैं। रचनाकारों ने स्वयं अपनी रचनाओं के रूपांतरण के लिए पटकथा लेखन भी किया है। दर्शक अथवा श्रोता इस तथ्य

को स्वीकारते हुए कि रूपांतरणकर्ता की अपनी छवि रचना में मौजूद है, यह भी मानते हैं कि रूपांतरणकर्ता ने मूल रचना के मर्म के साथ अवश्य न्याय किया होगा।

रूपांतरणकर्ता का अपना कहन, अपनी शैली मूल रचनाकार की रचना में ठीक उसी तरह विचलन लाती है जिस प्रकार एक ही कहानी को अलग–अलग व्यक्तियों द्वारा सुनाए जाने पर उनकी अपनी भाव–भंगिमाएँ, उनकी आवाज़ का उतार–चढ़ाव, उनकी भाषा तथा वय का प्रभाव आदि उस रचना को प्रभावित करते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो रूपांतरणकर्ता का काम और अधिक जटिल हो जाता है क्योंकि यहाँ उसे केवल अनुवाद भर नहीं कर देना है अपितु एक सर्जनात्मक व्यक्तित्व की उस रचना के साथ प्रत्येक क्षण उपस्थित रहना है। यह भी माना जाता है कि रूपांतरित पाठ के ग्राहक चूँकि अधिकांश स्थितियों में मूल रचना तथा उसकी भाषा से परिचित नहीं होते, ऐसे में रूपांतरणकर्ता की भूमिका और अधिक निर्णायक हो जाती है क्योंकि रूपांतरण के माध्यम से जो पाठ वे नए ग्राहक के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं उस पाठ की सत्यता के प्रति भी उनकी नैतिक ज़िम्मेदारी बनती है। कई बार रूपांतरित पाठ के ग्राहक मूल की सत्यता की जाँच हेतु मूल पाठ तक पहुँचने का भी प्रयास करते हैं जो उन्हें कभी अपनी भाषा में तथा अधिकांशतः अनुवाद के रूप में उपलब्ध होता है, ऐसी स्थिति में एक पाठ दोहरे रूपांतरण से गुज़रकर अपनी जातीय तथा सांस्कृतिक विशिष्टता न खो दे, यह ध्यान रखा जाना भी आवश्यक है।

अनुवाद की पारंपरिक परिभाषा में अनुवाद को मूल रचना की नकल के रूप में देखा गया है जहाँ अनुवादक का दायित्व मूल रचना का अनुकरण मात्र करके लक्ष्य पाठकवर्ग तक पहुँचा देना है। अनुवाद की इस पारंपरिक परिभाषा में अनुवादक का धर्म दो भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सेतु बनना है। सेतु बनने की इस प्रक्रिया में अनुवादक स्वयं इस पूरी प्रक्रिया में शामिल होकर भी दृश्य से अनुपस्थित रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहें, तो मूल के अनुकरण की इस प्रक्रिया में अनुवादक को लगभग अदृश्य ही रखा गया है। वे केवल मूल का अनुकरण करने के हकदार हैं, मूल में किसी प्रकार का विचलन करके अनुवादक की अपनी दृश्यता को अनुवादकर्म में स्वीकार नहीं किया गया। लेकिन रूपांतरण की यह प्रक्रिया न केवल अधिक जनतांत्रिक हैं अपितु मूल रचना को एक स्वतंत्र इकाई समझकर उसका नए ग्राहक की रुचि एवं परिस्थिति को ध्यान में रखकर कथा के पुनःसर्जन की समर्थक है। यहाँ रूपांतरणकर्ता केवल नकल या अनुकरण नहीं करते अपितु मूल रचना के पुनःसर्जन की प्रक्रिया में रूपांतरणकर्ता की अपनी दृष्टि को भी शामिल करते हैं।

लेकिन केवल इसी आधार पर किसी रचना को अनुवाद अथवा रूपांतरण नहीं कहा जा सकता। इनके अतिरिक्त भी अनुवाद अध्ययन में कुछ प्रकारों की चर्चा की गई है जिनमें व्याख्यानुवाद, पुनर्लेखन, नवसृजन आदि हैं जिनमें अनुवादक रूपांतरण की तरह छूट भी लेते हैं लेकिन भाषिक सीमाओं को केंद्र में रखते हुए मूल रचना तथा समाज के प्रति निष्ठा भी दिखाते हैं।

8.7 रूपांतरण : चुनौतियाँ व रणनीतियाँ

अब तक आपने जाना कि रूपांतरण से क्या अभिप्राय है, वैश्विक मनोरंजन उद्योग में रूपांतरण की क्या उपयोगिता है, रूपांतरणकर्ता की क्या भूमिका है तथा भारत में सिनेमा व टेलीविजन के क्षेत्र में रूपांतरण का क्या इतिहास रहा है। इस सबके बाद इस पर चर्चा किया जाना बेहद आवश्यक है कि रूपांतरणकर्ता जब किसी पाठ का रूपांतरण करते हैं तब उनके समक्ष कौन–कौन–सी प्रमुख चुनौतियाँ होती हैं तथा किस प्रकार वे पाठ के संदर्भ, उसके महत्व तथा रूपांतरण के उद्देश्य को केंद्र में रखकर किस प्रकार उनका रूपांतरण करते हैं। रूपांतरण की इस प्रक्रिया में वे पाठ की महत्ता का आकलन करते हुए तथा दर्शक वर्ग की प्रकृति को ध्यान में रूपांतरण की विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करते हैं जिनमें से कुछ की यहाँ चर्चा की जा रही है।

आप विभिन्न फिल्मों, टेलीविज़न कार्यक्रमों, इंटरनेट, वेब सीरीज़, वृत्तचित्र, नाटक आदि के माध्यम से विश्व के प्रसिद्ध तथा श्रेष्ठ साहित्य से परिचित हुए होंगे। ये सभी रचनाएँ अपनी भाषायी, भौगोलिक तथा सामाजिक–सांस्कृतिक सीमाएं लांघकर हम सब तक पहुँची हैं तो इसका कारण अनुवाद ही है। रूपांतरण भी अनुवाद का ही एक प्रकार है जिसके माध्यम से हम विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य तक और अधिक विश्वसनीय रूप से पहुँच सकते हैं। लेकिन यह समझा जाना भी आवश्यक है कि रूपांतरण की इस प्रक्रिया में रूपांतरणकर्ता को किन–किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

दरअसल, कोई भी रचना अपने समाज और परिवेश से उपजी होती है। इसी कारण, वह उस संस्कृति विशेष की परिचायक होती है। जब रूपांतरणकर्ता उस रचना के विषय, तथा विभिन्न भाषी समाज के लिए उसकी उपयोगिता पर विचार करते हैं तभी यह तय किया जाना भी आवश्यक हो जाता है कि इसे किस प्रकार रूपांतरित किया जाए इसे ही रूपांतरण की रणनीति कहते हैं।

8.7.1 सांस्कृतिक रूपांतरण

संस्कृति अपने आप में एक बेहद व्यापक शब्द है जो अपने भीतर मानव समाज की जीवन शैली से जुड़ी विभिन्न अनुभूतियों को समेटे हुए है। इसे किसी समाज विशेष की मान्यताओं, आस्थाओं, सामाजिक व्यवहारों, रीति–रिवाज़ों, आदतों के समुच्चय के रूप में समझा जा सकता है। यह भी सर्वविदित है कि अनुवादक दो भाषाओं तथा दो संस्कृतियों के संवाहक होते हैं। संक्षेप में कहा जाए तो अनुवादक दो भाषाओं तथा दो संस्कृतियों के बीच सेतु की भूमिका निभाते हैं। इसलिए यह बेहद आवश्यक है कि अनुवादक अनुवाद प्रक्रिया के दौरान लक्ष्यभाषा की संरचना के साथ लक्ष्य भाषा की संस्कृति से भी भली–भाँति परिचित हो। यहीं अनुवादक को यह तय करना होता है कि पाठ विशेष के अनुवाद में अनुवाद चिंतकों द्वारा सुझाई गई किस रणनीति का प्रयोग करेंगे।

सांस्कृतिक रूपांतरण का एक अन्यतम उदाहरण है विशाल भारद्वाज द्वारा शेक्सपीयर के नाटकों का हिंदी सिनेमाजगत के लिए रूपांतरण। विशाल भारद्वाज द्वारा रूपांतरित शेक्सपीयर के विभिन्न नाटकों – *ओथेलो (ओंकारा), मैकबेथ (मकबूल), हेमलेट (हैदर)* आदि को देख सकते हैं। आपने यदि ये फिल्में देखी हों तो आप रूपांतरणकर्ता द्वारा किए गए सांस्कृतिक तथा सामाजिक परिवेशगत परिवर्तनों को स्वयं ही रेखांकित कर सकते हैं। यहाँ हम देख सकते हैं कि रूपांतरणकर्ता अर्थात विशाल भारद्वाज ने नाटकों के मुख्य पात्रों का नाम भी भारतीय संस्कृति को ध्यान में रखते हुए परिवर्तित कर दिया है। फिल्मों के अन्य पक्ष जैसे कि भाषा, परिवेश तथा व्यवस्था आदि की भी मूल से तुलना करके दोनों में अंतर को रेखांकित किया जा सकता है। रूपांतरणकर्ता की अपनी शैली और दृष्टि दोनों यहाँ सहज दृष्टव्य है जो इस बात का प्रमाण हैं कि रूपांतरण मूलतः रूपांतरणकर्ता की विधा है जिसमें वह एक ही कहानी को एक नई अदा और शैली से अभिव्यक्त करते हैं। *ओंकारा* के माध्यम से यह देखा जा सकता है कि शेक्सपीयर के नाटक *ओथेलो* को निर्देशक या कि रूपांतरणकर्ता किस प्रकार ग्राहक के समय, परिवेश तथा रुचि को ध्यान में रखते हुए एक प्राचीन रचना को भी नए तरीके से व्यक्त कर सकते हैं। यह इस बात का भी प्रमाण है कि शेक्सपीयर केवल किसी समय या समाज विशेष तक सीमित न रहकर विश्व सिनेमा में वैश्विक स्रोत बन गया है। *हैदर* में किए गए सांस्कृतिक, भौगोलिक, परिवेशगत परिवर्तन कथा के प्रति लक्ष्य समाज को अधिक आकर्षित करते हैं क्योंकि उनके अपने समाज तथा परिवेश से लिए गए दृश्य उनके भीतर रचना विशेष के प्रति अधिक आस्था जगाते हैं। इस दृष्टि से शेक्सपीयर के नाटक सांस्कृतिक रूपांतरण के अन्यतम उदाहरण हैं।

8.7.2 साहित्यिक रूपांतरण

रूपांतरण के इस रूप या प्रकार का प्रयोग साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में किया जाता है। उपन्यास, कहानी, नाटक अथवा कविता के अनुवाद में इस तकनीक का अधिक प्रयोग किया जाता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि कोई भी साहित्यिक रचना अपनी संस्कृति, भाषा और परिवेश में गहरे गुँथी हुई होती है। रूपांतरण के इस रूप को पाठ से पाठ रूपांतरण भी कह सकते हैं। इसके अंतर्गत अनुवादक रचना का पूरा आस्वाद लेते हुए इसे पुनःप्रस्तुत करते हैं जिसे पुनःसृजन अथवा नवसृजन भी कहा जाता है।

अनुवाद की पारंपरिक परिभाषा के अंतर्गत इसे मूलतः मूल रचना का अनुकरण मात्र माना जाता है जिसमें अनुवादक स्वयं को लगभग अदृश्य रखते हुए रचना का अनुवाद करते हैं। इसी कारण अनुवादक को प्रपंचक कहा गया तथा अनुवाद को दोयम दृष्टि का कार्य माना गया। विभिन्न अनुवाद चिंतकों ने तो यह भी माना कि सर्जनात्मक साहित्य, विशेषतः कविता का अनुवाद असंभव है। और उन्होंने कविता के अनुवाद का विरोध किया। लेकिन अनुवादक को दी गई छूट के माध्यम से हम उच्चतम कोटि के विश्व साहित्य से परिचित हो सके। आज हम न केवल विश्व साहित्य को पढ़ते हैं अपितु कविता जैसी अननुवाद्य मानी जाने वाली विधा के भी बहुतेरे अनुवादो से हम समृद्ध हो पाए हैं। साहित्यिक अनुवादक से यह अपेक्षित है कि वे केवल दो भाषाओं और दो संस्कृतियों के ज्ञाता ही न हों अपितु दोनों भाषाओं के साहित्य की बारीकियों को भी समझते हों। इसी आधार पर वे कविता का अनुवाद करते समय कविता के भाव को समझते हुए उसका पुनःसृजन कर सकते हैं। इसके अभाव में उनका अनुवाद मूल की नकल मात्र बनकर रह जाएगा। फिल्म भी एक प्रकार का साहित्य ही है। रूपांतरण के भारतीय तथा वैश्विक इतिहास में उपन्यास तथा फिल्म के संबंध को देखा जा सकता है। विश्व सिनेमा से लेकर भारतीय सिनेमा तक महत्वपूर्ण तथा कालजयी उपन्यासों पर फिल्में बनी हैं। उपन्यास को साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विधा के रूप में जाना जाता है। उपन्यास में कथा अपने पूरे विस्तार से व्यक्त की जाती है। इसीलिए इसकी तुलना महाकाव्य से की गई है। उपन्यास पर बनी फिल्में इनके प्रभाव को कई गुना बढ़ा देती हैं। फिल्म के माध्यम से हम अपने प्रिय उपन्यास के चरित्रों और घटनाक्रम को चलचित्र के माध्यम से देख सकते हैं जिससे कथा और पात्रों के प्रति विश्वसनीयता और अधिक बढ़ जाती है। ऐसी ही अनेक साहित्यिक रचनाओं पर विश्व की बेहतरीन फिल्मों का निर्माण हुआ है। सन 1938 से जेन ऑस्टन के उपन्यासों की टी.वी. तथा सिनेमा के लिए रूपांतरण होता आया है। ऐसा इसलिए भी संभव हो सका क्योंकि जेन ऑस्टन के उपन्यासो में दिखाई गई प्रेम कहानियाँ समय और काल से परे सभी को आकर्षित करती आई हैं। 1990 में उनकी किताबों के आधार पर टेलीविजन के लिए बड़ी संख्या में मिनी सीरीज़ बनीं। आज अधिकतर लोग विश्व प्रसिद्ध उपन्यासों को उन पर बनी फिल्मों के माध्यम से जानते हैं। इतने लंबे समय के अंतराल के कारण आधुनिक पाठक के लिए जेन ऑस्टन के किताबों के चरित्रों की जीवनशैली तथा रोज़मर्रा की अन्य घटनाओं की तुलना करना मुश्किल है। ऑस्टन की कथाओं को समझने में फिल्मों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। फिल्म रूपांतरण की यदि चर्चा की जाए तो इसे लेकर दो विचारधाराएँ हैं। पहली विचारधारा पारंपरिक है जिसकी मान्यता है कि उपन्यास आधारित फिल्म यथासंभव मूल उपन्यास का दर्पण हों। दूसरी विचारधारा आधुनिक है जिसकी मान्यता है कि मूल उपन्यास से कथा तथा ज़रूरी तत्व लेकर उसे नए तरीके से प्रस्तुत किया जाएँ

यह एक सर्वविदित तथा सर्वस्वीकृत तथ्य है कि फिल्म की तुलना में मूल रचना सदैव बेहतर है। यद्यपि, जेन ऑस्टन की रचनाओं से प्रभावित फिल्मों की गुणवत्ता को देखकर इस वाक्य पर पुनःविचार किए जाने की इच्छा होती है। जेन आस्टॅन के दो बहुचर्चित उपन्यास हैं – *एम्मा* तथा *प्राइड एंड प्रेज्यूडिस*। एम्मा जहाँ 20 वर्षीय लड़की एम्मा

वुडहाउस की कहानी है जो हाइबरी नामक कस्बे में अपने दोस्तों के लिए मैचमेकर का काम करती है, वहीं *प्राइड एंड प्रेज्युडिस* की कथा एलिज़ाबेथ बेनेट और उसके सच्चे प्रेम की तलाश की यात्रा पर आधारित है। उदाहरण के लिए, हम इन कथाओं पर आधारित फिल्मों से कहानी, पात्र तथा अन्य पक्षों के आधार पर इनकी तुलना करके देख सकते हैं और देख सकते हैं कि हिंदी सहित विभिन्न भाषा के निर्देशकों तथा रूपांतरणकर्ताओं ने तत्कालीन परिवेश में निर्मित इन कथाओं को किस प्रकार आधुनिक समाज तथा पात्रों के आधार पर पुनर्निर्मित किया है।

आइए, अब एक अन्य उदाहरण लेते हैं। यह है भीष्म साहनी का प्रतिष्ठित उपन्यास – *तमस* जिस पर गोविंद निहलानी ने टेली–सीरियल का निर्माण भी किया। बाद में जिसे फिल्म के रूप में रिलीज़ किया गया। भीष्म साहनी ने बचपन में अपने गाँव रावलपिंडी में हुए सांप्रदायिक दंगों को अपनी आँखों से देखा था। कांग्रेस के कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने 1940 के आसपास सांप्रदायिक दंगों के खिलाफ हुए आंदोलन में भाग भी लिया था। इसी दौरान वे हिंसा, भय, जबरन पलायन आदि के गवाह रहे। सांप्रदायिक हिंसा की यही आग बढ़ते–बढ़ते हिंदुस्तान के विभाजन में तब्दील हो गई। अपने इसी स्वानुभूत सत्य के आधार पर भीष्म साहनी ने उपन्यास *तमस* लिखा जिसे 1974 में साहित्य अकादमी के सम्मान से सम्मानित किया गया। तमस के गुजराती, मलयालम, कश्मीरी, मणिपुरी, जर्मन, अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जापानी आदि विभिन्न देशी–विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुए। गोविंद निहलानी द्वारा निर्देशित यह फिल्म साहित्यिक रूपांतरण का अन्यतम उदाहरण है। इसी तरह अमृता प्रीतम द्वारा हिंदू–मुस्लिम संबंधों तथा विभाजन पर आधारित उपन्यास *पिंजर* का भी साहित्यिक रूपांतरण किया गया। इसके रूपांतरणकर्ता चंद्रप्रकाश द्विवेदी साहित्यिक रूपांतरण के लिए प्रसिद्ध हैं जिन्होंने कालांतर में काशीनाथ सिंह के उपन्यास *काशी का अस्सी* पर भी फिल्म बनाई। *'पिंजर'* के रूपांतरण में निर्देशक ने मूल रचना की प्रामाणिकता को बरकरार रखते हुए इसका रूपांतरण किया।

इसी तरह गुलज़ार द्वारा प्रेमचंद की कहानियों पर बने धारावाहिक तथा अनुराग बसु द्वारा निर्देशित रबींद्रनाथ टैगोर की कहानियों के रूपांतरण साहित्यिक रूपांतरण के अन्यतम उदाहरण हैं जिनमें रूपांतरणकर्ता का उद्देश्य इन रचनाओं को अधिक प्रामाणिक रूप में दर्शकों तक पहुँचाना था। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इनके रूपांतरण में मूल कथा तथा विश्वसनीयता को रूपांतरण के केंद्र में रखा गया।

8.7.3 प्रारूप का रूपांतरण और डबिंग

भारत में असंख्य सेटेलाइट टेलीविजन चैनलों के आगमन के साथ, कार्यक्रम के रूपांतरण का विचार धीरे–धीरे "क्लोनिंग" या प्रारूप रूपांतरण" में परिवर्तित हो गया। यह केवल प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों तक ही सिमट कर नहीं रहा गया, बल्कि इसने सम्पूर्ण विश्व में उसी टेलीविजन मीडिया को अपने विस्तृत दायरे में लिया। उदाहरण के लिए, *कौन बनेगा करोड़पति* की अपार सफलता ने केवल इस तथ्य को स्पष्ट किया कि कैसे एक भारतीय फिल्म महानायक ने शो का संचालन किया बल्कि इस बात को भी स्पष्ट किया कि कितनी सफलतापूर्वक ब्रिटिश कार्यक्रम *हू वांट्स टू बी ए मिलियेनायर* के प्रारूप का रूपांतरण या क्लोनिंग किया गया। इसी के आधार पर, *बिग बॉस, इंडियाज़ गॉट टैलेंट, इंडियन आइडल* आदि अनेक ऐसे कार्यक्रम हैं जो प्रारूप रूपांतरण के साथ–साथ दृश्य–श्रव्य से दृश्य–श्रव्य रूपांतरण का भी अन्यतम उदाहरण है। इस परिप्रेक्ष्य में, विभिन्न देशों/राष्ट्रों राज्यों में टेलीविजन के रूपांतरण और निर्माण (उत्पादन) की वास्तविक प्रक्रिया और सांस्कृतिक और आर्थिक भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को समझने की जरूरत है। प्रारूप के रूपांतरण पर विचार–विमर्श करते समय, मीडिया अनुसंधानकर्ताओं के लिए उपयुक्त होगा कि वे "राष्ट्रीय", "जातीय" और "सांस्कृतिक" जैसे पारंपरिक धाराओं से आगे बढ़े।

दूसरे शब्दों में, जिसे "संकरण" सांस्कृतिक उत्पाद कहा गया है, उसके बारे में और अधिक अध्ययन की आवश्यकता है। कुछ मीडिया पंडितों का मानना है कि उद्‌गामी उपग्रह मीडिया विषयवस्तु के साथ केंद्रीय (कोर) पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्य और वर्चस्व अपने साथ सजातीय भूमंडलीकृत संस्कृति लाएगा, जो कि काफी हद तक सही सिद्ध नहीं हुआ है। इसके स्थान पर, लाभ की रणनीति को बरकरार रखते हुए, इस क्षेत्र में एक पूर्ण नई भाषायी और सांस्कृतिक प्रवृत्ति का विकास हुआ है। भारत में प्रारूप का रूपांतरण कमोबेश रूप से हॉलीवुड फिल्मों का भारतीय भाषाओं में मुख्य रूप से रूपहले पर्दे (सिल्वर स्क्रीन) के लिए हुआ है। भारत के लगभग 200 मिलियन केबल और टेलीविजन दर्शक अंतरराष्ट्रीय दृश्य–श्रवण मनोरंजन और सूचना कंपनियों के लिए आय का एक संभावित स्रोत बन चुके हैं।

वैश्विक दृश्य–श्रवण की भाषा में डबिंग का अर्थ एक फिल्म या टेलीविजन कार्यक्रम के साथ साउंडट्रैक (ध्वनिपथ) को मूल भाषा से पूर्ण रूप से भिन्न भाषा में रूपांतरित करना है। सन 1990 के आरंभ से भारतीय उपमहाद्वीप में सेटेलाईट और केबल टेलीविजन के आगमन ने वैश्विक मनोरंजन उद्योग को भारतीय सांस्कृतिक बाजार में प्रवेश करने के लिए उचित अवसर उपलब्ध कराए हैं और छोटी–सी अवधि में ही, अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय टेलीविजन चैनल अंतरराष्ट्रीय भाषा के कार्यक्रमों, फिल्मों, और धारावाहिकों को महत्वपूर्ण भारतीय भाषाओं में डबिंग करना आरंभ कर दिया। आगे यह एक अच्छा खासा उद्योग बन गया है।

8.8 टेलीविजन कार्यक्रम का रूपांतरण और दृश्य बोधगम्यता (समझ)

टेलीविजन कार्यक्रम के रूपांतरण पर विचार–विमर्श करते समय, दृश्य बोधगम्यता (समझ) की अवधारणा को याद रखना उचित होगा। मानवीय मस्तिष्क की एक छवि को समझने की क्षमता को दृश्य बोधगम्यता (समझ) कहा जाता है। चूँकि टेलीविजन एक दृश्य–श्रवण माध्यम है, इसका प्राथमिक कार्य उदाहरण, प्रमाण, और विस्तृत अभिव्यक्ति के द्वारा संचार–संवाद को प्रकट करना और बढ़ाना है। इसलिए हम कहते हैं 'कि *"एक तस्वीर का मूल्य हजारों शब्दों के बराबर होता है*। संकेतशास्त्री रोला बार्थ्स ने दिखाया है कि एक चित्र वही 'सूचित करता है, जिसका यह प्रत्यक्ष रूप से प्रतिनिधित्व करता है और इससे से जुड़े हुए अन्य अर्थ और गुण केवल संकेतार्थ के लिए है। दृश्य और चित्रों को समझना या समाविष्ट करना बहुत अधिक रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि कैसे एक व्यक्ति अपने संस्कृति के अंदर रखा जाता है।

आधुनिक समय में, जनसंचार माध्यमों के व्यवसायी कमोबेश रूप से दृश्यों को बेचने की उपयोगिता को हम समझ चुके हैं और वे इन दृश्यों का उपयोग इसकी शक्ति के आधार पर न केवल ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए करते है बल्कि वे इन दृश्यों के माध्यम से संचार–संवाद का भी कार्य करते है। टेलीविजन और कार्यक्रम के रूपांतरण को समझने का प्रयास करते समय, किसी को इन दृश्यों के निहितार्थ और उपभोक्ताओं पर इसके प्रभाव के संबंध में अधिक चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। तब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि दृश्य–श्रव्य मीडिया का उपयोग करते हुए हम अपने पास उपलब्ध शाब्दिक सूचना के भंडार को कैसे रूपांतरित करें, जिससे कि इन सूचनाओं के उपभोक्ता इनकों समझ सके। इसलिए टेलीविजन के लिए कार्यक्रमों को रूपांतरित करते समय हमें दृश्य बोधगम्यता को बेहतर ढंग से समझने की आवश्यकता है। कम से कम शैक्षणिक दृष्टिकोण से, यह अध्ययन करना उपयोगी होगा कि कैसे जनसंचार माध्यमों के नए प्रारूप की विषय–वस्तु का, विशेषकर दृश्य माध्यम की विषयवस्तु का व्यक्तिगत के साथ–साथ सामाजिक निहितार्थ रहा है। इस तरीके से हम न केवल उसे, जिसे दृश्य कहा जाता है, बल्कि जनसंचार माध्यमों के आधुनिक संवाहनों द्वारा निर्मित बहुत प्रतीकात्मक क्रम को भी बहुत हद तक समझने और जानने में सफल हो सकते है।

8.9 सारांश

प्रस्तुत इकाई में हमने रूपांतरण के विविध आयामों की चर्चा करते हुए जाना कि रूपांतरण वस्तुतः अनुवाद का एक प्रकार है जो सूचना एवं साहित्य को व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। आपने यह भी जाना कि रूपांतरण में रूपांतरणकर्ता की क्या भूमिका होती है तथा रूपांतरण की प्रक्रिया में रूपांतरणकर्ता का अपना दृष्टिकोण, वैचारिकता, पाठ तथा लक्ष्य समाज की माँग किस प्रकार रूपांतरण की रणनीति को भी प्रभावित करता है। साथ ही हमने भारत और पश्चिम के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन करते हुए यह भी जाना कि टेलीविजन और कार्यक्रम का रूपांतरण क्या है? हमने विश्व की प्रसिद्ध काल्पनिक और गैर–काल्पनिक कृतियों की भी चर्चा की जिनका फिल्मों और टेलीविजन के लिए रूपांतरण किया गया है। टेलीविजन और कार्यक्रम रूपांतरण के अतिरिक्त साहित्यिक रचनाओं के रूपांतरण के अलावा साहित्यिक रचनाओं के फिल्मों के रूपांतरण को समझने की कोशिश की, टेलीविजन कार्यक्रम के रूपांतरण का अध्ययन करते समय, हमने इस तथ्य पर प्रकाश डाला है कि यह कैसे प्रारूप रूपांतरण और डबिंग से किस प्रकार भिन्न है? हमने इस इकाई का समापन इस तथ्य को जानकर किया है कि टेलीविजन और कार्यक्रम के रूपांतरण के लिए दृश्य बोधगम्यता (समझ) होनी आवश्यक है।

इस पाठ्यक्रम के खंड 3 में हम अंतर–माध्यम अनुवाद तथा इसके विविध आयामों के विषय में जानेंगे।

8.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. टेलीविजन कार्यक्रम का रूपांतरण क्या है? प्रमुख भारतीय काल्पनिक और गैर–काल्पनिक कृतियों के नाम बताएँ, जिसे भारतीय राष्ट्रीय प्रसारण चैनल दूरदर्शन द्वारा सन 1980 के दशक में स्वीकृत (प्रसारित) किया गया था।
2. वैश्विक मनोरंजन उद्योग में रूपांतरण कैसे कार्य करता है? प्रारूप के रूपांतरण और डबिंग में क्या अंतर है?
3. रूपांतरण में रूपांतरणकर्ता की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
4. रूपांतरण की विभिन्न तकनीकों पर प्रकाश डालिए।
5. सांस्कृतिक रूपांतरण से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।
6. क्या आप मानते हैं कि टेलीविजन कार्यक्रम के रूपांतरण के लिए दृश्य समझ आवश्यक है? समझाए।

8.11 उपयोगी पुस्तकें

- जगमोहन, *डाक्यूमेंट्री फिल्म्स एंड इंडियन अवेकनिंग*, पब्लिकेशन डिविजन, नई दिल्ली, 1990।
- न्यूमैन, डब्ल्यू. रसेल *दि फ्यूचर ऑफ दि मास ऑडियंस*, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1991।
- पेज डेविड और विलियम क्रेव्ली, *सेटेलाइट्स ओवर साउथ एशिया ब्रोडकास्टिंग, कल्चर एंड पब्लिक इंटरेस्ट, सेज,* नई दिल्ली, लंदन, 2001।
- स्च्राम्म, विल्बुर, संपादक, *मास कम्युनिकेशन, उराबना,* आईएल : यूनिवर्सिटी ऑफ इल्लिनोइस प्रेस, 1980।